ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 216-217**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

सर सैयद अहमद का सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचार

डॉ0 मो0 अली हुसैन

सहायक प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान विभाग,सह–विज्ञान विभाग मिर्जा गालिब कॉलेज, गया (बिहार) भारत

Received-18.09.2024, Revised-25.09.2024, Accepted-30.09.2024 E-mail : aaryvart2013@gmail.com

सारांशः धर्म के क्षेत्र में सैयद अहमद खाँ ने यह सिद्ध करने का प्रयास कि इस्लाम तथा ईसाई धर्म तत्वतः एक समान हैं। वे स्वयं स्वच्छन्द रूप से यूरोपियनों में मिलते थे और उनको भोजन के लिए आमंत्रित करते थे, उनके साथ भोजन करते थे। सन् 1870 में इंगलैंड से वापस आने पर वे इस पर जोर देने लगे कि इस्लाम में ऐसी कोई भी चीज नहीं है, जो विक्टोरिया युग के मूल्यों तथा आदर्शों के साथ असंगतिबद्ध हो। सन् 1864 में उन्होंने गाजीपुर में एक अंग्रेजी स्कूल स्थापित किया।

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, स्वच्छन्द रूप, असंगतिबद्ध, कर्मठ, प्रत्युत, प्रवृत्ति, मूल्य, आदर्श, समाविष्ट

भारत में राजभक्त मुसलमानों के नेता सैयद अहमद खाँ हुए। इनका जन्म दिल्ली के एक सैयद घराने में 17 अक्टूबर 1817 को हुआ था। सर सैयद बड़े ही कर्मठ पुरुष थे, वे एक लिपिक के रूप में अपने जीवन प्रारम्भ किये और 1841 में मुंसिफ के पद पर पहुँच गये। यद्यपि उनकी प्रवृत्ति साहित्य की ओर थी और गदर के पूर्व तक उन्होंने साहित्य लिखा भी खूब। उस समय तक उनकी रचनाओं में जो विचार व्यक्त हुए वे राजभक्ति के विचार नहीं थे, प्रत्युत उनकी थोड़ी बहुत समता वहाबी[1] विचारधारा से ही समझी जाती थी। 1857 के आन्दोलन की समाप्ति के पश्चात उन्होंने 'भारतीय विद्रोह के कारण' नामक पुस्तक लिखी। 1878 में लार्ड डफरित ने सर सैयद को लोक सेवा आयोग का सदस्य नियुक्त किया। जिस समय सैयद अहमद भारतीय विधान परिषद के सदस्य थे और जब उसमें मध्य प्रान्तीय स्वशासन विधेयक पर विवाद हो रहा था। उस समय 12 जनवरी 1883 को उन्होंने संतोष व्यक्त किया कि भारतवासियों को स्वशासन की उस कला की शिक्षा दी जा रही है, जिसने इंगलैंड को महान् बनाया है। फिर भी सैयद अहमद ने भारतीय राजनीति में चुनाव की प्रणाली को समाविष्ट करने का विरोध किया। मुहम्मद अली के शब्दों में वे राजभक्तों के भी 'राजभक्त' बने रहे।[2]

धर्म के क्षेत्र में उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास कि इस्लाम तथा ईसाई धर्म तत्वतः एक समान हैं। वे स्वयं स्वच्छन्द रूप से यूरोपियनों में मिलते थे और उनको भोजन के लिए आमंत्रित करते थे, उनके साथ भोजन करते थे। सन् 1870 में इंगलैंड से वापस आने पर वे इस पर जोर देने लगे कि इस्लाम में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जो विक्टोरिया युग के मूल्यों तथा आदर्शों के साथ असंगतिबद्ध हो। सन् 1864 में उन्होंने गाजीपुर में एक अंग्रेजी स्कूल स्थापित किया। 24 मई सन् 1875 को उन्होंने अलीगढ़ में एक स्कूल स्थापित किया जिसने शीघ्र ही विकसित होकर मोहम्मडेय एंग्लो ओरियंटल कॉंजिल का रूप धारण कर लिया जो आज अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से संचालित हो रहा है। सामान्यतया सर सैयद की दृष्टि अंग्रेजी शिक्षा माध्यम अभिमुख थी। इस सन्दर्भ में उनका यह तर्क था कि मुसलमान अंग्रजी शिक्षा प्राप्त करे जिससे उन्हें सरकारी नौकरियों के लिए समुचित प्रशिक्षण मिल सके। इसी परिपेक्षय में सर सैयद अहमद खाँ ने सन् 1886 में मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन (मोहेम्मडन एजुकेशन कोन्फिरस) की स्थापना की जिसका उद्धेश्य उन समस्त संस्थाओं के कार्यों में सामजस्य स्थापित करना था जो कि भारतीय मुसलमानों में शिक्षा कि अभिवृद्धि करने तथा उनकी दशा को सुधारने के कार्य में लगी हुई थीं।

सर सैयद समाज सुधार की महत्ता को अंगीकार करते थे। अपनी मासिक पत्रिका तहजीबुल अखलाक के द्वारा उन्होंने इसका समर्थन किया। उनका एक उद्धेश्य यह था कि मानसिक प्रबुद्धीकरण के लिए पश्चिम के वैज्ञानिक तथा बुद्धिवादी विश्व–दर्शन को लोक प्रिय बनाया जाय। वे पर्दे के विरोधी और स्त्रीशिक्षा के जबरदस्त हिमायती थे। स्त्री–शिक्षा में कुरान की बाधा वे नहीं मानते थे। उनका यह भी दावा था कि कुरान जिहाद (धर्म युद्ध) और गुलामीप्रथा के औचित्य को नहीं स्वीकार करता है। बुद्धिमान और प्राकृतिकता (रीजन और नेचर), इन दो कसौटियों पर जो बातें खरी उतरें, उन्हें ही मानने का उपदेश था। कुरान और हदीस में जो चमत्कारपूर्ण अलौकिक बातें है, उसके संबंध में उनकी मान्यता था कि या तो वे अलंकार की भाषा में कहीं गयी हैं जिनका बुद्धिगम्य अर्थ लेना चाहिए अथवा उनका अर्थ, आज के मुसलमानों की समझ में न आने से उन्हें निर्विवाद छोड़ देना चाहिए।

परन्तु एम0 ए0 ओ0 कॉलिज की स्थापना तथा थ्योडोर बेका के उसके प्रथम प्रिंसिपल नियुक्त होने के उपरान्त, बृद्ध सर सैयद में एक जबरदस्त परिवर्तन आ गया। श्री वेक के प्रभाव में आकर उन्होंने अपने प्रायः समस्त उदारवादी सिद्धान्तों को तिरस्कृत कर दिया और वे साम्प्रदायिकता की ओर बढ़ गये। हेक्टर बोलियथ के शब्दों में, ''वे उस सबके जनक थे जो कि, अन्ततः मोहम्द अली जिन्ना के मानस में जिन्ना के मानस में घटित होने वाला था।

आरम्भ में सैयद अहमद खाँ देशभक्ति की भावनाओं से उत्प्रेरित हुए थे। 27 जनवरी 1883 को एक भाषण में उन्होंने कहा ''जिस प्रकार उच्च जाति के हिन्दू किसी समय बाहर से आकर इस देश में बस गये और भूल गये कि उनका आदि निवास स्थान कहाँ था तथा भारत को ही अपना देश समझने लगे, मुसलमानों ने भी ठीक वैसा ही किया। उन्होंने भी सैकड़ों वर्ष पूर्व अपने–अपने देश छोड़ दिये, और वे भी इस भारत भूमि को अपना समझते हैं ये मेरे हिन्दू भाई तथा सहधर्मी मुसलमान दोनों एक वायु में साँस लेते हैं, पवित्र गंगा और यमुना का जल पीते हैं, उसी भूमि की उपज का भोग करते हैं जो ईश्वर ने इस देश को दी है, और साथ–साथ जीते तथा मरते हैं। मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि यदि एक क्षण के

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

लिए हम ईश्वर की धारणा को भूला दे तो हम देखेंगे कि दैनिक जीवन के हर मामले में हिन्दू तथा मुसलमान एक ही राष्ट्र के सदस्य हैं और देश की उन्नति तभी सम्भव हो सकती है जब हमारे ह्रदय एक हो तथा हमारे बीच परस्परिक प्रेम और सहानुभूति हो। मैंने सदैव यही कहा है कि हमारा भारत देश एक नव–विवाहित वधू के सदृश है और हिन्दू उसके दो सुन्दर तथा मनमोहन नेत्र हैं, यदि दोनों में पारस्परिक मेलमिलाप हो तो वधू सदैव देदीप्यमान तथा सुन्दर बनी रहेगी, किन्तु यदि उन्होंने भिन्न दिशाओं में देखने का संकल्प कर लिया तो वधू निश्चय ही भोंड़ी हो जायेगी और हो सकता है कि अंशतः अन्धी भी हो जाय।'' अपने जीवन के देशभक्तिपूर्ण काल में सैयद अहमद ने इलबर्ट विधेयक का जिसके द्वारा भारतीय न्यायाधीशों के क्षेत्राधिकार में भेदभाव की नीति को दूर करने का प्रस्ताव किया गया था, समर्थन किया। आगे चलकर सैयद अहमद के विचारो में उल्लेखनीय परिवर्तन आ गया। उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर सन्देह लगा, और उन्होंने अपने सम्प्रदाय के सदस्यों को उससे पृथक रहने की सलाह दी है।

एम0 एन0 राय लिखते हैं'' जिन हिन्दुओं ने प्रतिनिधि शासन और समाज सुधार हेतु आन्दोलन आरम्भ किया था वे बुद्धिजीवी बुर्जुआ थे। इसके विपरीत अलीगढ़ में शिक्षा प्राप्त करने वाले, जिन पर अंग्रेजों ने अनुग्रह की दृष्टि की थी, भू–अभिजाततंत्रीय वर्ग के लोग थे। सामाजिक दृष्टि से इतने भिन्न तत्वों को एक राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्तर्गत संयुक्त करना सम्भव नहीं।''[3] उन्होंने सोचा कि मुसलामानों के लिए हितकर यही है कि वे शिक्षा की प्रगति पर ही ध्यान केन्द्रित करें और इसीलिए उन्होंने सन् 1888 में एजुकेशनल कांग्रेस (शिक्षा सम्मेलन) की स्थापना की। उन्होंने यूनाइटेड इंण्डिया पैट्रियाटिक एसोशिएशन (1888) तथा मोहम्मडेन एंग्लो–इंण्डियन डिफेंस एसोशिएशन (1893) नाम की उन दो संस्थाओं का भी नेतृत्व किया जिनका मुख्य उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के प्रभाव को रोकना था। सैयद अहमद ने पैट्रियाटिक एसोशिएशन की स्थापना वाराणसी के राजा शिवप्रसाद की सहायता से की थी। मोहम्मदडेन एंग्लो–इंण्डियन एसोशिएशन स्पष्टतः राजभक्त था। उसके उद्देश्यों में भी इस बात की घोषणा कर दी गयी थी। मुसलमानों में राजनीतिक आन्दोलन को रोकना उसकी मुख्य नीति थी। किन्तु सैयद अहमद के प्रत्यनों के बाबजूद बदरूद्दीन तैयबजी जैसे अनेक मुसलमान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित हो गये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 17वीं ई0 में जब इसलाम जनता मूल धर्म से पृथक हटकर रूढ़ियों और अन्ध विश्वासों से जकड़ी जा रही थी, उसी समयअरब के रेगिस्तान में एक धार्मिक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जिसके प्रवर्तक मुहम्मद इब्न अब्दुल बहाव थे। इस आन्दोलन द्वारा रूढ़ियों और कुरीतियों को गिराने में इसलाम को कड़ी सहायता मिली। इतिहास में यह आन्दोलन वहाबी आन्दोलन के नाम से विख्यात है।
2. सिलेक्ट राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज ऑफ मुहम्मद अली, पृ0 13.
3. इंडिया इन ट्रान्जीशन, पृ0 125.

*****